# बिहारी : बिहारी रत्नाकर दोहा संख्या 6-10

डॉ. नवीन नंदवाना
हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

# बिहारी रत्नाकर- 6

सालति है नटसाल सी, क्यों हूँ निकसति नाँहि ।
मनमथ नेजा नोक सी, खुभी-खुभी जिय माँहि ।। 6 ।।

# भावार्थ

नायिका की सखी से नायक कहता है कि शरीर के भीतर प्रविष्ट तीर की टूटी नोंक के समान मुझे दुःख देती हुई कामदेव के भाले की नोंक की भाँति उस (नायिका) की खुभी (कर्णाभरण) मेरे मन में चुभ गई है, जो किसी भी प्रकार बाहर नहीं निकल पा रही है।

अलंकार- यमक तथा पूर्णोपमा।

# बिहारी रत्नाकर- 7

जुवति जौन्ह में मिलि गई, नेक न दीति लखाइ ।

सौंधें के डौरे लगी, अलि चली संग जाइ ||7||

शब्दार्थ :-

जुवति = युवती, अभिसारिका। जोन्ह = ज्योत्स्ना।

सौंधे = सुगन्धित। अली = सखी, भ्रमर|

# भावार्थ

दूती अपनी सखी से नायिका का रूप-वर्णन करती है कि वह गौराङ्गना शुभ्र चाँदनी में मिलकर ऐसी एकाकार हो गई कि दोनों का अन्तर नहीं दिखाई पड़ता था। केवल उसके अंगों की सुगन्ध के सहारे-सहारे ही भँवरे तथा उसकी सखी उसके साथ-साथ चल रहे थे।

अलंकार - उन्मीलित तथा भ्रान्तिमान।

# बिहारी रत्नाकर- 8

हौं रीझी, लखि रीझिहौ, छबिहि छबीले लाल।

सोनजुही-सी होति दुति, मिलति मालती माल॥

शब्दार्थ :-

लखि = देखकर, रीझिहो = आकर्षित हो जाओगे।

# भावार्थ

दूती नायक के पास आकर नायिका के रूप की प्रशंसा करते हुए कहती है कि मैं तो उसे देखकर रीझ चुकी हूँ, पर तुम भी उसे देख लेने पर अवश्य रीझ जाओगे। हे छबीले लाल ! उसकी छवि इतनी सुन्दर है कि मालती के पुष्पों की (श्वेत) माला भी उसका स्पर्श पाकर सोनजुही के रंग की (पीली) हो जाती है।

# विशेष

पीला रंग पड़ना भय तथा पराभव का द्योतक होता है। अतः एक ओर तो मालती की माला भय से पीली पड़ती है तो दूसरी ओर नायिका के रंग का अनुसरण करने से पीली हो जाती है।

अलंकार - तद्गुण तथा अनुप्रास।

# बिहारी रत्नाकर- 9

बहके-सब जिय की कहत, ठौर कुठौरु लखे न।

छिन और छिन और छाके नैन।।

शब्दार्थ :-

बहके = भ्रान्त हुए,

ठोरु कुठौरु = स्थान का औचित्य तथा अनौचित्य।

# भावार्थ

कोई नायिका अपनी सखी से कह रही है कि ये नेत्र तो उस नायक की रूप-मदिरा पीकर छक गये हैं। इसलिए उचित-अनुचित का विचार छोड़कर बहक रहे हैं अर्थात् मेरे मन की सारी बातें कह देते हैं। पल-पल पर उसी की ओर देखने लग जाते हैं। ये एक क्षण में किसी और प्रकार के हैं तो दूसरे क्षण और ही प्रकार के हो जाते हैं।

# विशेष

मदिरा के उन्माद में व्यक्ति लोक मर्यादा को छोड़कर कैसी भी बात कह सकता है।

अलंकार - भेदकातिशयोक्ति तथा रूपक।

# बिहारी रत्नाकर- 10

फिरि फिरि चितु उतहीं रहतु, टुटी लाज की लाव।

अंग-अंग छबि-झौर में, भयौ भौंर की नाव।।

शब्दार्थ :-

टुटी = टूट गयी है,

लाव = रस्सी।

झर = समूह और भँवर।

# भावार्थ

नायक नायिका की अन्तरंग सखी के पास आकर कहता है। कि मेरा मन तो फिर-फिर कर उधर ही (नायिका की ओर) चला जाता है। क्योंकि अब लाज और मर्यादा की रस्सी तो टूट चुकी है। अतः यह मन उसके अंग-प्रत्यंग की छवियों के समूह पर आकर्षित होकर भँवर के बीच फंसी हुई नाव बनकर रह गया है।

# विशेष

प्रायः जब नदी में पानी अधिक मात्रा में होता है तो नौका को चलाते समय एक नाविक किनारे-किनारे हाथ में रस्सी को, जो कि नाव से बँधी होती है, पकड़कर चलता है, ताकि नाव डूब न जाए, किन्तु जैसे ही वह रस्सी टूट जाती है वैसे ही नाव भँवर में जा फँसती है ।

अलंकार - अनुप्रास तथा सांगरूपक।

साभार :

बिहारी रत्नाकर : जगन्नाथ दास रत्नाकर

बिहारी सतसई : देवेन्द्र शर्मा 'इंद्र'

धन्यवाद !